www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

UPSC CSE 2014 MAINS PAPER A DECEMBER 20, 2014 MAITHILI LANGUAGE QUESTION PAPER

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

1. निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर लगभग *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) राजनीतिमे स्त्रीगणक भूमिका

(b) की भारतकेँ चीनक अर्थ-व्यवस्थामे विकाससँ भयाक्रान्त रहबाक चाही?

(c) भारतीय समाजमे तलाकक स्वीकार्यतामे वृद्धि

(d) की कठोर कानून नैतिकताकेँ अवरुद्ध कए सकैछ?

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

कतिपय शताब्दीपूर्व वैश्विक स्तर पर लोकक एक स्थानसँ दोसर स्थान पर प्रवासक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल जखन मानवजाति समूहमे एक क्षेत्रसँ दोसर क्षेत्रमे अनेक कारणवश भ्रमण करय लागल जेना गोचर भूमिक अभाव किंवा एहन भूमि जाहि पर बिक्रीक लेल अन्नक उत्पादन नहि होयबाक कारणे आदि आदि। तेँ मानसिक अशान्ति अथवा अन्य प्रकारक अत्याचारसँ बचबाक हेतु, अपन आस्था ओ विश्वासक स्वतंत्रताक हेतु, अभिव्यक्तिक निरंकुशताक हेतु अथवा अपन सुख-दुःखक संगीक विछोहक दुःखसँ त्राण पयबाक हेतु स्थानान्तरणक योजना आवश्यक बुझि पड़लैक। परिणामस्वरूप एहि अप्रवासीलोकनिक अपन सांस्कृतिक धरोहरक सेहो स्थानान्तरण भेलैक, इयह ओकर तात्कालिक पूँजीक रूपमे नव-नव स्थानमे पल्लवित-पुष्पित होबय लगलैक। मार्गमे ओहि अप्रवासीवृन्दकेँ अन्य जनजातिसँ सम्मिलित होयबाक क्रममे किछु विरोधक अवसर सेहो अयलैक। युद्ध, व्यापार अथवा विवाह-सदृश कतिपय अवसर पर सामना सेहो करय पड़लैक तेँ प्रारम्भमे किछु दिन धरि तनावक स्थिति सेहो रहलैक मुदा कालान्तरमे शान्तिक स्थापना क्रमशः सेहो कलाकृतिक विकासक संगे होबय लगलैक। सम्बन्धक प्रगाढ़ता लेन-देनसँ बढ़य लगलैक। स्वाभाविक छैक जे कोनो संस्कृति अथवा एक समूहविशेषक सांगठनिक क्षमताक वृद्धि स्वतंत्र एवं शान्तिमय वातावरणेमे होइत छैक आ प्रत्येक वर्ग अथवा संगठनक विकास उत्तरोत्तर होबय लगैत छैक। तेँ ई संभव छैक जे मंगोलियन अलास्काक क्षेत्रमे प्रवेश कय गेल होयत आ तेँ ब्रिटेनमे संयुक्त रूपसँ नव संस्कृतिक उद्भव भेलैक आ लोकक समूह झुंड बनाकय एहन भूमि पर विस्थापित होबय लागल जे स्वीकृत नियमक अनुकूल छलैक। तेँ प्रायः कोलम्बस यूरोपीय देशक एही परिप्रेक्ष्यमे नेतृत्व करबाक अभियान वैश्विक खोजक रूपमे कयलनि। ओयह उपनिवेशीकरण अन्य राष्ट्र पर अधिकार प्राप्त करबाक साधन बनल एवं विजयी सम्राटक अधीन ओहने संस्कृतिक अनुरूप रहबाक बाध्यता सेहो भेलैक। आइ एक देशसँ दोसर देशमे अधिकांश प्रवास करबाक कारण अछि व्यापार आ व्यवसाय ई सभ उदाहरण अछि एक-दोसराक बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदानक कारणेँ संस्कृतिक मिश्रणक। प्रत्येक समूह अपन पूर्वजक संस्कृतिक रक्षा करय चाहैत अछि। अतीतक सुखद प्रसंगक स्मृतिमे विषादक भावना स्वाभाविक छैक मुदा एके-दू पुस्त वितला पर पूर्वजक ओ प्राचीन रंग-रूप नव रंग-रीतिमे आत्मसात भए जाइत छैक। संभव छैक जे अगिला किछु शताब्दीक बाद विश्वक प्राचीन संस्कृति-सभ्यताक विस्मरण भए जाइक कारण लोक जतहि बसैत अछि ताही ठामक गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी ओकरा प्रिय लागय लगैत छैक तेँ अपन प्राचीन संस्कृति विश्वक धरोहर

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

बनि जाइत छैक। किछु एहन कट्टर लोक अवश्य अछि जे ओकरा पर दोसर रंग नहि चढ़ैत छैक मुदा ई बन्धन आब अपरिहार्य नहि रहलैक अछि। लोकक दृष्टिकोण उदार भय रहल छैक, विश्व-बन्धुत्वक भावना उमरि रहल छैक तेँ भावनाक धरातल पर सेहो आब विश्वक दूरी समटा रहल अछि कारण कोनो पुरुष अथवा स्त्री एकान्तमे नहि रहि सकैत अछि ओ एक सामाजिक प्राणी अछि तेँ अपकेन्द्री अथवा अभिकेन्द्रीक नियम आब चलय बला संभव नहि लगैत अछि, किछु कालक हेतु भनहि ओ लागू होअय। अनगिनित पुस्त किएक ने प्रार्थना कयने होअय एहि अस्तित्वक रक्षाक हेतु, अपन विश्वास आ श्रद्धाक भावकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु वाह्य प्रभावक विरोध किएक ने भेल होअय मुदा जेना हमरालोकनि नीक जेकाँ जनैत छी जे कतबो भावनात्मक आधार किएक ने होउक मुदा ओकर प्रभाव ककरो पड़य बला कथमपि नहि छैक भनहि ओ केहनो दुर्बल होअय। ओकरामे केहनो त्रुटि रहौक मुदा ओकर शरीरक जे 'डी० एन० ए०' अथवा 'आर० एन० ए०' छैक जो आब ओकरा स्वीकार नहि करतैक। आब ओकर शरीर आ आत्मा सरलतासँ प्रभावित होइत छैक जे विश्वमे केहन बसात बहैत छैक, लोक की बजैत अछि, ओ की करैत अछि तकर व्यापक प्रभाव सर्वथा स्वाभाविक छैक कारण अज्ञानतासँ डर उत्पन्न होइत छैक, डरसँ घृणा बढ़ैत अछि, घृणा आत्म-विश्वासकेँ नष्ट करैत अछि आओर अन्ततः तकर परिणाम होइत छैक विनाश आ मृत्यु। कतिपय प्राचीन संस्कृति एहि प्रकारक दुष्परिणाम भोगि चुकल अछि आ ओकर अन्त भ' चुकल छैक। जीवाक हेतु आनक संग रहब आवश्यके हेतैक भनहि ओ स्थान नर्क किएक ने होउक।

(a) प्रवास करबाक क्रममे नव स्थान पर सर्वप्रथम प्रवासीलोकनिकेँ एक-दोसराक संग वार्त्ता करबामे कोन-कोन समस्याक सामना करय पड़लैक?

(b) प्राचीन कालमे एक स्थानकेँ छोड़ि दोसर स्थान पर बसबाक की कारण रहैक? प्रवासक प्राचीन समयक कारण एवं आधुनिक कालक प्रवासक कारणमे की अन्तर छैक?

(c) विभिन्न संस्कृति कोना एक-दोसराक संग मिश्रित भ' जाइत अछि?

(d) कतिपय प्राचीन संस्कृतिक विलोप कोना भ' गेलैक अछि?

(e) लेखक कोन आधार पर कहैत छथि जे कोनो संस्कृतिक लेल ई संभव नहि छैक जे ओ असम्पृक्त रहि जाय?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मात्र एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। शीर्षकक उल्लेख करबाक प्रयोजन नहि अछि : 60

जखन हम कोनो जीविकाक हेतु आवेदन दैत छी आ अपन आत्म-विवरणिका प्रस्तुत करैत छी, तँ हमरालोकनि सामान्यतया प्रयास करैत छी जे अपन प्रत्येक अनुभवक सद्गुण निवेदित कय दी, अपन समस्त पृष्ठभूमिक। अधिकांश लोक अपन त्रुटिक उल्लेखकेँ गुप्त रखैत छथि जे ओ अपन जीवनमे भोगने छथि आ मात्र सफलताक चर्चा जमि कय करैत छथि। जखन नियोजक एहि प्रकारक विवरणिका देखैत अछि, ओ प्रायः इयह अनुभव करैत छथि जे आवेदकमे तँ सब अपन पैघे लोकक वर्णन देखौने अछि। हमरालोकनि प्रयास करैत छी जे अपनाकेँ एहि रूपमे प्रस्तुत करी जे जीविका प्राप्त भए जाय।

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

एहि प्रसंग क्रीड़ा-जगतक एकटा रोचक आ सत्य घटना अछि। एकटा विश्वविद्यालयक टीम फुटबॉलक हेतु अभ्यास करैत रहय। एक गोटे 'लाइनमैन'क स्थान पर रहय। ई सभसँ अधिक तेज धावकक रूपमे जानल जाइत छल। एक दिन ई अपन कोचसँ पुछलक जे की ओ थोड़ेक दूर तेजसँ दौड़ि सकैत अछि? कोच ओकरा आज्ञा देलकैक।

ओ 'लाइनमैन' प्रतिदिन दौड़बाक लेल जाइत छल मुदा विलम्बसँ घुरैत छल। दिन-दिन एहिना दौड़ैत रहल, दिन-दिन पछुआ जाइत रहल। ई एहि लेल आश्चर्य नहि लगैत छलैक जे कोनो लाइनमैन तेज धावक नहि होइत अछि।

कोच एकर दिन-दिनक पराजय देखलाक बाद ओ मोनेमोन सोचलक जे आखिर ई लाइनमैन किएक एहिमे सम्मिलित होइत अछि जखन सभ दिन पछुआ जाइत अछि ई तँ भने लाइनमैनक भूमिकामे उपयुक्त अछि। कोच किछु दिन धरि निरीक्षण करैत रहल आ एक दिन ओकरासँ पुछबाक निर्णय कयलक। ओ लाइनमैनकेँ कहलकैक जे अहाँ तँ भने लाइनमैन छी, अहाँ तेज धावकक प्रतियोगी किएक बनैत छी? ओकरा ओहि लाइनमैनक उत्तर सुनि आश्चर्य भेलैक जखन ओ कहलकैक—"हम एहि ठाम लाइनमैनकेँ पराजित करबाक हेतु इच्छुक नहि छी, हम सेहो नीक जेकाँ ई बुझैत छी जे ई कार्य हमरा लेल बेसी सुलभ अछि मुदा हमरा तँ ई सिखबाक लालसा अछि जे कोना हम तेज धावक बनि सकैत छी आ अपने देखैत होयब जे हम कनेके कमसँ पछुआ जाइत छी।"

ई घटना आन्तरिक शक्तिक सूचक अछि। एहि संसारमे हमरालोकनि निरन्तर नीक बनबाक इच्छा रखैत छी मुदा हम अपनाकेँ जे बुझी ईश्वर सभ बुझैत छथि। भगवानो ओकरे सहायता करैत छथिन जे प्रयासरत रहैत अछि तेँ अपन सत्यकेँ ईश्वरसँ नुका कय नहि राखि सकैत छी। ओ फुटबॉल खेलाड़ी अपन त्रुटिक ज्ञान रखैत छल आ ओकरा सुधारबाक प्रयासमे लागल रहल। ओ इयह बुझलक जे ओ अपनाकेँ तखने सुधारि सकैत अछि जखन अपन दुर्बल पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करत। तखने अपन दुर्बलता पर विजय प्राप्त कय सकैत अछि। ओहि व्यक्तिकेँ तेज धावककसंग प्रतियोगितामे सम्मिलित भेलासँ अपन दुर्बल पक्षक ज्ञान भेलैक आ ओकरा सुधार करबाक ओ प्रयास कयलक। ओकरा कोनो पुरस्कारक अभिलाषा नहि अपितु अपन त्रुटि-मार्जनक प्रबल लालसा रहैक। ओ तेज धावकक नीक गुणसँ प्रेरणा लेलक आ अपन क्षमतामे वृद्धि करबाक सफल प्रयास कयलक। तेँ जखन हम अपन त्रुटि पर ध्यान दैत छी तखन ओहिसँ नीक करबाक प्रेरणा भेटैत अछि। निरन्तर सत्प्रयाससँ असफलता कम आ सफलता दिशि लोक अधिक अग्रसर होइत अछि। एक दिन एहन अबैत छैक जखन त्रुटि समाप्त भ' जाइत अछि आ सफलताक उच्चतम शिखर पर लोक आरूढ़ भ' जाइत अछि।

तेँ हम अपन त्रुटिकेँ, दुर्बलताकेँ ईश्वरसँ नुका कय नहि राखि सकैत छी, ओ सर्वान्तरयामी छथि। जखन परमात्मा ई देखैत छथिन जे केओ अपन कर्त्तव्यक पालन दृढ़तासँ करैत अछि तँ ओहो ओकर सहायता करैत छथि, सभ अवगुण गुणमे परिवर्त्तित भ' जाइत छैक। तेँ यदि हम संघर्षरत छी तँ निश्चये एक दिन भगवानक कृपासँ सफलता प्राप्त होयबे करत। ईश्वर सर्वशक्तिसम्पन्न छथि आ सभक उन्नतिमे सहायक होइत छथि।

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

Most people involved in the film production industry know that there is a constant evolution. The change is in the way movies are made, discovered, marketed, distributed, shown, and seen. Following independence in 1947, the 1950s and 60s are regarded as the 'Golden Age' of Indian cinema in terms of films, stars, music and lyrics. The genre was loosely defined, the most popular being 'socials', films which addressed the social problems of citizens in the newly developing state. In the mid-1960s, camera technology revolutionized the documentary method by enabling the synchronized recording of image and sound. Today, CINEMA 4D users are free to create scenes without worrying about the size of objects or how many objects are in the scene, shaded settings, texture size, multipass-rendering or eye-catching particle systems.

Until the 1960s, filmmaking companies, many of whom owned studios, dominated the film industry. Artistes and technicians were either their employees or were contracted on a long-term basis. Since the 1960s, however, most performers went the freelance way, resulting in the star system and huge escalations in film production costs. Financing deals in the industry also started becoming murkier and murkier, since then. According to estimates, the Indian film industry has an annual turnover of ₹ 60 billion. It employs more than 6 million people, most of whom are contract workers as opposed to regular employees. In the late 1990s, it was recognized as an industry.

More money impacted the perception, visual representation, and definitions of reality. Like any other media of mass communication, the themes are relevant to their times.

Thus, filmmaking became more expensive and riskier. As opposed to the time of the Gemini Studio, when only 5 percent of a movie was shot outdoor, filmmakers often select overseas locations in order to create greater realism, manage costs more efficiently or source people and props. Filmmakers spend considerable time scouting for the perfect location.

5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अनुवाद अंग्रेजीमे करू : 20

हास्य लोकक क्षमता अथवा गुण अछि, वस्तु अथवा परिस्थिति जे आनन्दक भावनाकेँ उद्वेलित करैत अछि। ई मनोरंजनक एहन रूपकेँ प्रस्तुत करैत अछि अथवा मानवीय भावनाक आदान-प्रदानक एहन माध्यम अछि जे एहन संवेगकेँ जगबैत अछि जाहिसँ लोक हँसैत-हँसैत गदगद भ' जाइत अछि।

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

आलोचना तँ निर्णयक एक प्रक्रिया अछि अथवा सूचित कयल गेल व्याख्या। रचनात्मक समालोचना अभिव्यक्तिक एक प्रकार अछि जाहिसँ लोक अनकर व्यवहारमे सुधार अनबाक प्रयास करैत अछि एक अनधिकृत रीतिसँ, आओर सामान्यतया कूटनीतिक एहन पहुँच जाहिसँ समाजमे अनुचित कार्य नहि होअय, आ ई 'सृजनात्मक' अछि जे सर्वथा अपमान, अनादरक विपरीत जाहिमे आदेशक कोनो गंध नहि। एकर अभिप्राय होइछ सुधार एक शान्तिपूर्ण एवं सुहृत्सम्मित पद्धितसँ।

व्यंग्य तँ एक एहन यंत्र अछि जे समालोचक द्वारा प्रयुक्त कयल जाइछ। सामान्यतया एकर एक सुनिश्चित लक्ष्य रहैत छैक, ओ कोनो खास व्यक्तिक अथवा व्यक्तिसमूहक प्रति एक एहन धारणा अथवा एक एहन प्रवृत्ति, एक संस्था अथवा एक सामाजिक संस्थाक प्रति जे ओकर त्रुटि पर दृष्टि देब उद्देश्य होइछ। कारण व्यंग्य कखनो क्रोध आ हास्य दुनूकें बान्हि दैत अछि जे अधिक अधलाह लगैत अछि एवं निश्चितरूपसँ व्यंग्यात्मक होयबाक कारणें बेसीकाल एकर लोक अर्थ उनटा लगबैत अछि यद्यपि एकरा कटाक्ष कहल जाइत अछि।

ई एक प्रकारक कलात्मक रूप अछि जे मनुष्य अथवा व्यक्तिक दुराचार, व्यसन, विवेकहीन क्रियाकलाप, गारि-फज्झति, अन्य अवगुण केर भर्त्सना, उपहास अथवा अन्य माध्यमसँ गंजन कयल जाइछ, कखनो एकर उद्देश्य सुधारात्मक रहैत छैक। साहित्य एवं ताहूमे नाटक एकर मुख्य संवाहक होइछ मुदा ई सिनेमा, दृश्यकाव्य एवं राजनीतिक कार्टून द्वारा सेहो प्रचारित कयल जाइत अछि। होरेसक मतानुसार व्यंग्यकार एक भद्र पुरुष एहि विश्वक होइछ जे सर्वत्र अधलाह कार्य पर दृष्टि रखैत अछि मुदा ई विनम्र हास्यक बदला क्रोध सेहो उत्पन्न करैत अछि।

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 10

(i) अनुलोम

(ii) मूक

(iii) शुक्ल

(iv) स्थूल

(v) प्रवृत्ति

(b) निम्नलिखित शब्दयुगलमे भेद स्पष्ट करू : 10

(i) अड़ाँच—अड़ाँची

(ii) कलोल—कल्लोल

(iii) गत—गात

(iv) ठेसी—ढेही

(v) तम—ताम

Prepp
Your Personal Exams Guide

(c) निम्नलिखित लोकोक्तिकेँ वाक्यमे प्रयोग करू : 10

(i) उठान हारब

(ii) बिनु पेनक लोटा

(iii) कान काटब

(iv) तीनमे की तेरहमे

(v) पट्टी पढ़ाएब

(d) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 10

(i) स्मृति जननिहार

(ii) सब दिन चलनिहार व्रत

(iii) जकरा लगले फूरि जाइक

(iv) आगाँ जन्म लेनिहार

(v) पातक बनल कुटी

★ ★ ★